an>

Title: Need to set up a NIFT centre in Chanderi

श्री कृष्णपालसिंह यादव (गुना): चंदेरी साड़ियों का प्राचीन इतिहास है और महाभारत काल से ही इस ऐतिहासिक नगरी का वर्णन कई ग्रंथों एवं पुराणों में होता आया है । चंदेरी में तीन तरह के फैब्रिक्स तैयार किये जाते है-प्योर सिल्क, चंदेरी कॉटन और सिल्क कॉटन । चंदेरी साड़ी को वर्ष 2005 में GI tag भी दिया गया है. चंदेरी साड़ी की भारी मांग के बावजूद भी यहाँ के बुनकरों की हालत चिंताजनक है और कोरोना महामारी के कारण उनके जीवन यापन और आर्थिक स्थिति पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है ।इन बुनकरों की प्रगति के लिए सरकार द्वारा कुछ व्यापक कदम उठाने होंगे जिसमे सबसे प्रमुख है कि चंदेरी में NIFT की एक शाखा को स्वीकृति दी जाए जिससे नवीनतम तकनीक और डिज़ाइन के माध्यम से बुनकरों को SKILL DEVELOPMENT और TRAINING दी जा सके और चंदेरी रेशम पर R&D को भी प्रोत्साहन मिले । इसके अतिरिक्त मेरी मांग है की गुना/अशोकनगर में जो रेशम केंद्र बंद किये जा रहे है उन्हें यथावत रखा जाए ताकि चंदेरी साड़ियों को कच्चा माल और सरलता से उपलब्ध करवाया जाए । मेरा सरकार से विनम्र आग्रह है की अशोकनगर के चंदेरी रेशम के विकास और बुनकरों की आय बढ़ाने के लिए NIFT का केंद्र बनाया जाए और रेशम केंद्रों के rehabilitation के लिए भी प्रावधान किया जाए ।